



Original Article

**21 वीं सदी के हिंदी साहित्य तथा सिनेमा में चित्रित समस्या
 (नीरजा माधव का 'बचा सके धरती को' काव्य संग्रह के संदर्भ में)**

प्रा. कोळी सोमनाथ तातोबा

सहायक प्राध्यापक

छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा

Manuscript ID:
 IJAAR-C130320
 ISSN: 2347-7075
 Impact Factor – 8.141

Volume - 13
 Issue - 3
 January – February 2026
 Pp. 96 - 99

Submitted: 19 Jan.2026
 Revised: 24 Jan. 2026
 Accepted: 10 Feb. 2026
 Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:
 प्रा. कोळी सोमनाथ तातोबा

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22785551

DOI Link:
<https://doi.org/10.5281/zenodo.22785551>



Creative Commons



सार:

हिंदी साहित्य की बहुमुखी प्रतिभा की धनी नीरजा माधव के 'बचा सके धरती को' काव्य संग्रह में मानव जाति के कल्याण की बात कही है। प्रस्तुत काव्य संग्रह में उन्होंने धरती को बचाने की बात पिता के माध्यम से करने का प्रयास किया है। जिसके द्वारा उन्होंने अपनी कविता के माध्यम से जीवन की सच्चाई को उजागर करने का प्रयास किया है। समस्या ही मानव जीवन का अभिन्न अंग है। समस्या ही मनुष्य को जीवन में पथप्रदर्शन करना सिखाती है। साथ ही वर्चस्ववादी मनोवृत्ति के कारण संहारक शस्त्रों और अस्त्रों का निर्माण विश्व के लिए खतरे का संदेश है। नौकरी से अवकाश प्राप्त लोगों का जीवन भी चित्रित किया गया है। पर्यावरण और मनुष्य के बीच के संबंधों पर भी चर्चा करने का प्रयास किया गया है। इस संग्रह की कविताओं द्वारा उन्होंने अनेक विषयों को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत काव्य संग्रह के द्वारा नए-नए विषयों पर प्रकाश डालने का कार्य किया है। जो मानव जाति के कल्याण के लिए काम करना कितना आवश्यक है। यह बताने का प्रयास इस कविता संग्रह में किया गया है।

मुख्य शब्द: मानसिक, संकल्प, उद्देश्य, ब्रम्हांड, संहारक, हथियारों, आविष्कार, तरक्की, अवकाश, व्यथा, संस्कृति, प्राकृतिक, जनजीवन, आपदाओं, भूमंडलीकरण और यांत्रिकीकरण आदि शब्द।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

प्रा. कोळी सोमनाथ तातोबा. (2026). 21 वीं सदी के हिंदी साहित्य तथा सिनेमा में चित्रित समस्या (नीरजा माधव का 'बचा सके धरती को' काव्य संग्रह के संदर्भ में). International Journal of Advance and Applied Research, 13(3), 96 – 99. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22785551>

प्रस्तावना:

नीरजा माधव का 'बचा सके धरती को' काव्य संग्रह का प्रकाशन वर्ष 2021 में एस.बी.एस.पब्लिकेशन, वाराणसी

द्वारा किया गया है। प्रस्तुत संग्रह में कुल मिलकर 60 कविताएँ हैं। जिसमें विषय की विविधता के दर्शन होते हैं। विभिन्न समस्याओं को उन्होंने अपनी कविताओं में अभिव्यक्ति देने का



प्रयास किया गया है। नीरजा माधव प्रस्तुत किताब की भूमिका में स्वयं इस कविता संग्रह के बारे में कहती है ; “ “बचा सके धरती को ” संग्रह पिता के बहाने पूरी धरती को बचा लेने का एक मानसिक संकल्प है। जो धरती के पर्यावरण, ऋतुओं, सम्बन्धों और उनसे भी ऊपर उठता हुआ पूरी सृष्टि को अपने में समेटता है।”¹ स्पष्ट है पृथ्वी पर एकता का सूत्र स्थापित करना कवयित्री का उद्देश्य है।

नीरजा माधव का ‘बचा सके धरती को ’ कविता में कहती है ; “ कब तक खोजा जा सकेगा / ब्रम्हांड के ‘काले विवर’ का भेद / कब रुकेगा / पृथ्वी – पुत्रों द्वारा / मारक, संहारक हथियारों / का आविष्कार / और इस प्रकार / माँ-पृथ्वी का विनाश।”² स्पष्ट है जब तक मनुष्य के दिमाख में दूसरों को नष्ट करने का विचार रहेगा तब तक हम पृथ्वी का विनाश ही होता देखेंगे। हमारे विचारों में बदलाव आना जरूरी है। जिससे मानव कल्याण का हित ध्यान में रखकर काम करना होगा। विज्ञान के तरक्की ने ज्ञान के नए क्षेत्र खोले हैं। इसका लाभ मानव कल्याण के लिए होना आवश्यक है। जब तक एक दूसरे से तुलना करते हुए प्रतिस्पर्धा करेंगे तब तक मानव जीवन तनाव में ही आएगा। यह वर्तमान समय की सबसे बड़ी समस्या है।

साथ ही नौकरी से अवकाश ग्रहण कर पेंशन पर गुजारा करने वाले लोगों का जीवन संघर्ष चित्रित किया गया है। उन्हें बैंक में जाकर किस प्रकार इंतजार करना पड़ता है। इस संदर्भ में कवयित्री नीरजा माधव कहती है; “ मैं देखना चाहती हूँ / डबडबाई आँखों और विदीर्ण होते मन से / पेंशन वाली उस ऑफिस को / जहाँ बुढ़ापा काटने एवज में / मिलते थे चन्द रुपये / और उन्हें पाने के लिए / खड़े रहना पड़ता था तुम्हें / घंटो लम्बी कतार में / भूखे प्यासे।”³ स्पष्ट है जीविका चलाने हेतु जब पेंशन पर गुजारा करने

वाले लोगों की समस्या को चित्रित करने का प्रयास किया है। इससे बूढ़े लोगों की सामाजिक समस्याओं पर भी कवयित्री ने गहन दृष्टि से देखने का प्रयास किया है। उन लोगों को पेंशन ऑफिस में बहुत इंतजार करना पड़ता है। इस बारे में सरकार को विचार करने के लिए मजबूर करने का प्रयास किया है। यह आज के युग की समस्या है।

‘पोपली मुस्कराहट’ कविता में पर्यावरण का महत्व विशद किया है। आज भी पर्यावरण मनुष्य जीवन के लिए काफी सहायता प्रदान करता है। भारतीय संस्कृति में पर्यावरण को अनन्य साधारण महत्त्व है। पर्यावरण ने हमेशा ही मनुष्य जीवन को सहायता करने का कार्य किया। पेड़ –पौधों का इसमें बहुत बड़ा योगदान रहा है। प्रो. (डॉ.) सविता मेनकुदले पर्यावरण के संदर्भ में कहती है ; “भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही पर्यावरण शुद्धता पर बहुत विचार किया जा रहा है। भारतीय संस्कृति ही हमेशा ही प्राकृतिक संपदा के संरक्षण का संदेश देती रही है। ऋषि-मुनियों तथा महापुरुषों ने प्राकृतिक संपदा जल, जंगल और जमीन के प्रति पर्यावरण चेतना को जनजीवन से जोड़ने की कोशिश की है।”⁴ स्पष्ट है प्रकृति और मानव के बीच के संबंध हमेशा ही समन्वयात्मक रहे हैं। नीरजा माधव जी ने इसी प्रकार प्रकृति और मानव के बीच के समन्वय को भी चित्रित किया है ; “ हम बहुत समृद्ध थे तब / जब सुबह-सुबह / नीम के पेड़ से तोड़ी दातुन / पिता के हाथों से पकड़ / चुभालते थे हम निंदियाए से।”⁵ स्पष्ट है मानव और प्रकृति का रिश्ता पहले से अच्छा रहा है। इसी कारण कोई भी बीमारी दूर करने के लिए नीम जैसी बातों का सहारा लिया जाता है। आज मनुष्य स्वयं के स्वार्थवश जंगलों का विनाश कर रहा है। यह वर्तमानकालीन सबसे बड़ी समस्या है।



‘छोड़ देंगे प्रेम करना’ कविता में नीरजा माधव जी ने जब मनुष्य जीवन में प्रेम ही नहीं बचेगा तो जीवन नीरस हो जाएगा। यह बताने का प्रयास किया है। प्रेम ही भावना मनुष्य जीवन में एक-दूसरे को करिब लाने का कार्य करती है। प्रेम ही मानव जीवन आशावादी पहलू होता है। नीरजा माधव इस संदर्भ में कहती है ; “ चीटियाँ नहीं निकलेगी कतारबद्ध / अपने सफ़ेद अंडे लिए / छोड़ देंगी मधुमक्खियाँ / संचित करना मिठास / अपने खाली छत्तों को भरने के लिए।”⁶ स्पष्ट है जब मनुष्य जीवन में निराशा छा जाती है। तब कोई काम करने की इच्छा नहीं रहती। यह नियम प्रकृति के सभी जीवों पर लागू होती है। प्रेम का अभाव आज की सबसे बड़ी समस्या है।

मनुष्य का जीवन चक्र एक समान नहीं रहता। इसमें निरंतर बदलाव आते रहते हैं। कभी अकाल, बारिश, बीमारियाँ, धूप, ठंड और मानवनिर्मित समस्याओं से मनुष्य जीवन घिरा हुआ है। एस.पी.अग्रवाल इस संदर्भ में कहते हैं ; “ पर्यावरण जीवन के आसपास के उन महत्वपूर्ण कारकों का गठन है ,जो उसके व्यवहार, प्रजनन और उसके अस्तित्व को प्रभावित करते हैं।”⁷ स्पष्ट है पर्यावरण के बदलाव का परिणाम मानव जीवन पर होता रहता है। नीरजा माधव जी ‘जीवन चक्र’ कविता में मनुष्य जीवन प्राकृतिक आपदाओं से पीड़ित है , उसे व्यक्त करते हुए कहा है; “अब जबकि/ हम खड़े हैं / ए भयानक समय के सम्मुख / देख रहे हैं / बादलों का फटना / भूस्खलन।”⁸ स्पष्ट है समय का किसी को कोई अंदाजा नहीं होता। प्रकृति में कभी भी बदलाव आता है। इन समस्याओं के लिए मानव स्वयं जिम्मेदार है।

आज भी समूचे विश्व में भारत की पहचान ‘बुद्ध’ और ‘गाँधी’ का देश ऐसी है। दोनों महानुभावों ने संयम और

शांति का संदेश विश्व को दिया है। आज के भौतिक जीवन में दोनों के तत्वों की आवश्यकता है। आज मनुष्य जीवन मशीनवत बन गया है। इतना बड़ा प्रभाव भूमंडलीकरण और यांत्रिकीकरण का प्रभाव मनुष्य जीवन पर दिखाई देता है। आज मनुष्य के लिए इन बातों की अपेक्षा शांति की आवश्यकता है। नीरजा माधव ‘अग्नि स्नान’ कविता में इस संदर्भ में कहती है ; “बोधि वृक्ष की हवाओं ने / फैला दिये धरा पर / शान्ति-सूत्र के पाठ।”⁹ स्पष्ट है आज भी विश्व को अशांतता की जगह पर युद्ध नहीं बुद्ध की आवश्यकता है। आज पूरे विश्व में युद्ध के बादल छाये हुए हैं। कई राष्ट्रों की वर्चस्ववादी नीति के कारण अशांतता का माहौल तैयार हो गया है। यह समस्या आज पूरा विश्व अनुभव कर रहा है।

साथ ही मनुष्य जीवन में शिक्षा का महत्व विशद किया है। आज भी हमारे समाज में शिक्षा केवल कुछ ही लोगों तक पहुँच गयी है। शिक्षा ही मनुष्य जीवन के विकास एवं विचारों का परिचायक है। शिक्षा के बिना मनुष्य जीवन अंधकारमय होता है। इसी कारण सरकार को भी शिक्षा के प्रचार और प्रसार में योगदान देना चाहिए। इसकी वजह से लोगों में वैचारिकता और निर्णय की क्षमता जागृत होती है। ‘उदास मुस्कराहट’ कविता में शिक्षा का महत्व व्यक्त बताते हुए नीरजा माधव कहती है ; “ तुम्हीं ने सिखाया था / पहले-पहल / वर्णों को मिलाकर / नये शब्द गढ़ना / समझाए थे / प्रतीक अर्थ उन शब्दों के।”¹⁰ स्पष्ट है शिक्षा ही समाज को जागरूक करने का हथियार है। इसके बिना समाज का कल्याण दुर्लभ है।

निष्कर्ष:

उपर्युक्त पद्धति से समाज के सामने कौन सी समस्या होती है। इसका सोदाहरण चित्रण नीरजा माधव जी ने ‘बचा



सके धरती को 'इस कविता संग्रह में किया है। जिससे हमारे समाज की वास्तविक सच्चाई उजागर करने का सफल प्रयास किया गया है। प्रस्तुत काव्य संग्रह में नीरजा माधव जी हमारे देश को 'युद्ध की नहीं, बुद्ध' की आवश्यकता है। इस बात को स्पष्ट करने का कार्य किया है। अवकाश प्राप्त लोगों का जीवन किस प्रकार समस्याओं से भरा होता है। प्रकृति के साथ खिलवाड़ करना अर्थात् समस्याओं को न्यौता देना है। वैश्विक स्तर पर एक-दूसरे से स्पर्धा करना समस्या का कारण है। इस प्रकार विभिन्न समस्याओं को समझाने का सफल प्रयास प्रस्तुत काव्यसंग्रह में किया है।

संदर्भ सूची:

1. नीरजा माधव, बचा सके धरती को, एस.बी.एस.पब्लिकेशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण- 2021, भूमिका से पृ.सं. (vii)
2. वहीं, पृ. सं.- 15
3. वहीं, पृ. सं.- 19
4. प्रो. (डॉ.) सविता मेनकुदले, हिंदी उपन्यासों में चित्रित पर्यावरण, पूजा प्रकाशन, कानपुर, वहीं, पृ. सं.- 21

5. नीरजा माधव, बचा सके धरती को, एस.बी.एस.पब्लिकेशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण- 2021, पृ.सं. - 23
6. नीरजा माधव, बचा सके धरती को, एस.बी.एस.पब्लिकेशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण- 2021, पृ.सं. - 30
7. एस.पी. अग्रवाल, एनवायरमेंट स्टडीज, नरोसा पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली प्रकाशन वर्ष – 2006, पृ.सं.- 02
8. नीरजा माधव, बचा सके धरती को, एस.बी.एस.पब्लिकेशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण- 2021, पृ.सं. - 33
9. नीरजा माधव, बचा सके धरती को, एस.बी.एस.पब्लिकेशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण- 2021, पृ.सं. – 38
10. नीरजा माधव, बचा सके धरती को, एस.बी.एस.पब्लिकेशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण- 2021, पृ.सं. - 40